INSTITUTE OF DISTANCE EDUCATION

IDE

Rajiv Gandhi University

(Formerly Centre for Distance Education)
Rajiv Gandhi University
Rono Hills, Doimukh

ASSIGNMENT RESPONSE FORMAT

Name : Mr./Ms. BUMI NUK

ERN*/Roll No. : MAHIN/18

Class : M.A 1st Semester

Subject : लोक साहित्य

Paper : MAHIND - 403

Marked Obtained : 38

Instruction :

The assignments are to be written neatly in his/her own handwriting. Every candidate must submit completed assignment booklets **within the specified date.** It is one of the essential components of examination. The students are supposed to **obtain minimum 40%** of marks in assignment as per University rules.

In case one is not able to submit assignment she/he will be automatically declared absent and ineligible.

The learners can collect their assignment within the specified date from the respective Study Centres.

(N.B.: ERN*- Enrolment Number)

प्रश्न 1. लोक शब्द का परिचय देते हुए उसकी अवधारणा पर प्रकाश डाले।

उत्तर: समग्र रूप में 'लोक' शब्द का प्रयोग उस जनसमूह के लिए किया जाता है, जो साज-सज्जा, ऊपरी दिखावा, सभ्यता एवं शिक्षा आदि से दूर आदिम मनोवृत्तियों से युक्त होता है। इस प्रकार वैदिक काल से लेकर आज तक 'लोक' शब्द का प्रयोग प्रायः समान अर्थों में अनवरत रूप में प्राप्त होता है। द्रष्टव्य यह है कि 'लोक' शब्द का प्रयोग लोक-कल्याण अथवा लोक-संग्रह के संदर्भों में किया गया है।

'साहित्य' शब्द के पूर्व 'लोक' अभिधान लगाने के बाद इसका अर्थ होगा - लोक का साहित्य। 'लोक' का अर्थ जनता-जनार्दन द्वारा लिया जाता है। इसलिए लोक साहित्य का बोध ऐसे साहित्य से होता है; जिसकी रचना जनता-जनार्दन द्वारा की जाती है।

लोक साहित्य अन्य समाज-विज्ञानों से बहुत निकट से जुड़ा हुआ है। मानव-समाज का अध्ययन करने वाले सभी समाज विज्ञानों के अध्ययन की प्रचुर सामग्री लोक साहित्य में उपलब्ध हो जाती है। अतः इनका परस्पर संबंध बहुत प्रगाढ़ माना जाएगा। इसलिए कुछ शास्त्रों, कलाओं या समाज-विज्ञानों से लोक

साहित्य में उपलब्ध हो जाती है। अतः इनका परस्पर संबंध बहुत प्रगाढ़ माना जाएगा। इसीलिए कुछ शास्त्रों, कलाओं या समाज-विज्ञानों से लोक साहित्य के संबंधों की विवेचना यहां करेंगे। जिस प्रकार लोक साहित्य में अन्य समाज-विज्ञानों के अध्ययन के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध हो जाती है, उसी प्रकार साहित्य के अध्येता को भी अन्य समाज-विज्ञानों का अध्ययन करने से अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों की प्राप्ति हो जाती है। अतः समाज-विज्ञानों के अनुसंधानकर्ताओं को लोक साहित्य का तथा लोक साहित्य के अध्येताओं को अन्य समाज-विज्ञानों का अध्ययन अपेक्षित है, जिससे अंतर-अनुशासनपरक अध्ययन किए जा सकें। वर्तमान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी ऐसे तुलनात्मक अंतर-अनुशासन पर आधारित शोध कार्यों एवं प्रोजेक्टों को पर्याप्त प्रोत्साहन दे रहा है। इस इकाई में हम लोक साहित्य से संबंधित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करेंगे।

INSTITUTE OF DISTANCE EDUCATION IDE

Rajiv Gandhi University

(Formerly Centre for Distance Education)
Rajiv Gandhi University
Rono Hills, Doimukh

ASSIGNMENT RESPONSE FORMAT

Name	: Mr./Ms. CHUZEE DIGRU TAMIN
ERN*/Roll No.	: MAHIN / 06
Class	: Ist semester
Subject	: LOK SAHITYA (लोक साहित्य)
Paper	: MAHIND – 403
Marked Obtained	: 40

Instruction :

The assignments are to be written neatly in his/her own handwriting. Every candidate must submit completed assignment booklets **within the specified date.** It is one of the essential components of examination. The students are supposed to **obtain minimum 40%** of marks in assignment as per University rules.

In case one is not able to submit assignment she/he will be automatically declared absent and ineligible.

The learners can collect their assignment within the specified date from the respective Study Centres.

(N.B.: ERN*- Enrolment Number)

प्रश्न 1 'लोक' शब्द का परिचय देते हुए उसकी अवधारणा पर प्रकाश डाले।

उत्तर समग्र रूप मे 'लोक' शब्द का प्रयोग उस जनसमूह के लिए किया जाता हैं, जो साज-सज्जा, ऊपरी दिखावा, सभ्यता एंव शिक्षा आदि से दूर आदिम मनोवृत्तियों से युक्त होता हैं।

इस प्रकार वैदिक काल से लेकर आज तक 'लोक' शब्द का प्रयोग प्राय: समान अर्थों में अनवरत रूप में प्राप्त होता हैं। दृष्टव्य यह है कि 'लोक' शब्द का प्रयोग लोक-कल्याण अथवा लोक-संग्रह के संदर्भों मे किया गया है।

लोक साहित्य अन्य समाज-विज्ञानो से बहुत निकट से जुड़ा हुआ हैं। मानव-समाज का अध्ययन करने वाले सभी समाज-विज्ञानों के अध्ययन की प्रचुर सामग्री लोक साहित्य में उपलब्ध हो जाती हैं। अत: इनका परस्पर संबंध बहुत प्रगाढ़ माना जाएगा।

* लोक की अवधारणा

भारतीय साहित्य मे 'लोक' शब्द बहुत प्राचीन काल से प्रयुक्त होता आ रहा हैं। 'लोक' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की 'लोकृ दर्शने' धातु में 'घञ' प्रत्यय जोड़ने से हुई हैं। 'लोकृ दर्शने' धातु का अर्थ है 'देखना'। अत: 'लोक' शब्द का मूल अर्थ हुआ - 'देखने वाला'। परंतु व्यवहार में 'लोक' शब्द का प्रयोग 'संपूर्ण जनमानस' के लिए होता हैं।

लोक शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ हैं- देखने वाला। शब्दकोश में इस शब्द के सात अर्थ मिलते हैं-

(1) स्थान बोधक

(2) संसार

(3) प्रदेश या क्षेत्र

(4) जन या लोग

(5) समाज

(6) प्राणी

(7) यश।

समग्र रूप में 'लोक' शब्द का प्रयोग उस जनसमूह के लिए किया जाता हैं जो साज-सज्जा, ऊपरी दिखावा, सभ्यता एंव शिक्षा आदि से दूर आदिम मनोवृत्तियो से युक्त होता हैं।

इस प्रकार वैदिक काल से लेकर आज तक 'लोक' शब्द का प्रयोग प्राय: समान अर्थों में अनवरत रूप में प्राप्त होता हैं। दृष्टव्य यह हैं कि 'लोक' शब्द का प्रयोग लोक-कल्याण अथवा लोक-संग्रह के संदर्भों में किया गया हैं।

हिंदी साहित्य में भी परंपरागत रूप में 'सामान्य जनता' के अर्थ में 'लोक शब्द का प्रयोग किया जाता रहा हैं हिंदी साहित्य के शोधार्थियों ने अपने शोध प्रबंधो में यह स्पष्टत: प्रमाणीत किया हैं कि हिंदी साहित्य

INSTITUTE OF DISTANCE EDUCATION IDE

Rajiv Gandhi University

(Formerly Centre for Distance Education)
Rajiv Gandhi University
Rono Hills, Doimukh

ASSIGNMENT RESPONSE FORMAT

Name : Mr./Ms. pura Juri

ERN*/Roll No. : 20DEHIN008

Class : M.A 2nd year

Subject : हिंदी गद्य साहित्य

Paper : MAHIND - 502

Marked Obtained : 42

Instruction :

The assignments are to be written neatly in his/her own handwriting. Every candidate must submit completed assignment booklets **within the specified date.** It is one of the essential components of examination. The students are supposed to **obtain minimum 40%** of marks in assignment as per University rules.

In case one is not able to submit assignment she/he will be automatically declared absent and ineligible.

The learners can collect their assignment within the specified date from the respective Study Centres.

(N.B.: ERN*- Enrolment Number)

प्रश्न: २ गोदान में प्रस्तुत स्त्री चेतना का विस्तार से विवेचन कीजिए।

उत्तर: गोदान उपन्यास के लेखक प्रेमचंद ने भारतीय समाज के विविध रूपों का सजीव एवं विश्लेषणात्मक चित्रण किया है। जिसमें सोहाग का मजबूत आधार, कृषक जीवन, जमींदारों का वास्तविक स्वरूप, सामाजिक व्यवस्था, आत्म चिंतन, दाम्पत्य जीवन, पुरुष की स्वार्थी प्रवृत्ति का चित्रण, नारी चेतना, धार्मिक, विकृतियों का दर्शन, भविष्य की आशंका, कर्तव्यों का निर्वहन, वर्गीय भेदभाव का दुष्प्रभाव, बौद्धिकता की प्रधानता, विवाह संस्कार, लोकतंत्र का विकृत स्वरूप, आर्थिक अभाव, नारी के आदर्श गुणों का बखान, पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव, वंशानुगत गुणों का प्रभाव, आधुनिक प्रेमबोध का दिग्दर्शन, संयुक्त परिवार का लाभ, सेवा भाव जैसे ज्वलंत मुद्दों का बहुत सूक्ष्म विवेचन किया गया है।

प्रश्न:२२

उत्तर: गोदान उपन्यास में जीवन के आदर्श और यथार्थ दोनों स्थितियों का चित्रण किया गया है। मानव जीवन आदर्श और यथार्थ के प्रांगण में केन्द्रित होता है। आदर्शवाद समाज के भयावह विकराल यथार्थ को मनोरम स्वरूप प्रदान कर सर्वग्राह्य बनाता है और यथार्थ धरातल मनुष्य की चिंतन शैली को विकसित करता है। गोदान को महाकाव्य माना जाए या न माना जाए इस विषय पर एक मत होने से पहले महाकाव्य की प्रमुख विशेषताओं का गोदान के साथ तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है और यहां इस आधार पर गोदान उपन्यास को महाकाव्य की कसौटी पर परखने का प्रयास किया गया है।

<u>गोदान में स्त्री चेतना:</u> नारी के सामाजिक जीवन और स्त्री पात्रों के करुण चित्रण ने समाज के बुद्धिजीवियों को इस विषय में पुनर्विचार के लिए प्रेरित किया है।

INSTITUTE OF DISTANCE EDUCATION

IDE

Rajiv Gandhi University

(Formerly Centre for Distance Education)
Rajiv Gandhi University
Rono Hills, Doimukh

ASSIGNMENT RESPONSE FORMAT

Name : Mr./Ms. KEMBOM LOLLEN

ERN*/Roll No. : (23 DEHIH05)

Class : M.A Ist SEMESTER

Subject : (402) HINDI

Paper : (402) आदिकालीन और मध्यकालीन काव्य (अ)

Marked Obtained : 36

Instruction :

The assignments are to be written neatly in his/her own handwriting. Every candidate must submit completed assignment booklets **within the specified date.** It is one of the essential components of examination. The students are supposed to **obtain minimum 40%** of marks in assignment as per University rules.

In case one is not able to submit assignment she/he will be automatically declared absent and ineligible.

The learners can collect their assignment within the specified date from the respective Study Centres.

(N.B.: ERN*- Enrolment Number)

प्रश्न 1. पृथ्वीराज रासो का परिचय देते हुए इसकी प्रामाणिकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता विषय पर ऐतिहासिक विवाद का आरंभ प्रो. बूलर द्वारा एशियाटिक सोसायटी ऑफ कलकत्ता से सन् 1875 ई. में प्रकाशित होने वाले 'पृथ्वीराज रासो' के अप्रामाणिकता अर्थ जाल सिद्ध करके सोसायटी से इसके प्रकाशन बंद किए जाने हेतु लिखे पत्र से माना जाता है। प्रो. बूलर अपने मित्र डॉक्टर हर्बर्ट मॉरिसन के साथ हस्तलिखित ग्रंथों की खोज में जब कश्मीर यात्रा पर गए तो वहां उन्हें 1875 ई. के 'पृथ्वीराज विजय' नामक ताडपत्रीय खंडित ग्रंथ संस्कृत में उपलब्ध हुआ। जिसका रचयिता पृथ्वीराज का समकालीन और राजकवि सिद्ध होता है। इस ग्रंथ में पृथ्वीराज के वंशावली घटनाएं एवं अन्य प्रमाण लेख मालवा और गुजरात के शिलालेखों से मिल जाते हैं। इस आधार पर प्रो. बूलर ने सोसायटी को लिखे पत्र के प्रतिक्रियास्वरूप 'पृथ्वीराज रासो' का प्रकाशन बंद हो गया और प्रामाणिक-अप्रामाणिकता का प्रश्न उभर आया।

प्रो. बूलर ने अपने मत की पुष्टि के तर्क में दो पूर्व भारतीय विद्वानों के मत दिए, जिसमें जोधपुर के कवि मुरारि दान चारण थे, जो संभवतः प्रथम विद्वान थे जिन्होंने परंपरागत इस ग्रंथ की प्रामाणिकता एवं मूल्यांकन के विषय में शंकाएं उठाई और उदयपुर के इतिहासकार श्यामलदास, जिन्होंने रासो के ऐतिहासिक संवतों का सूक्ष्म अध्ययन किया था। रासो का प्रकाशन बंद हो जाने से ही इसकी प्रामाणिकता पर प्रश्न उभरा जो आज तक समाप्त नहीं हुआ।

बंगाल की रॉयल एशियाटिक सोसायटी के तत्वावधान में श्री मोहन लाल विष्णुलाल पंड्या ने रासो का 1887 ई. में प्रथम भाग प्रकाशित कराया और इसके प्रकाशन में लगे रहते हुए रासो की प्रामाणिकता के विरुद्ध आक्षेपों का उत्तर भी देते रहे। पृथ्वीराज रासो विषयक अध्ययन का श्रेय मूलतः कर्नल जेम्स टॉड को दिया जाता है जिन्होंने इसके कुछ अंशों का अनुवाद किया और इसके आधार पर अपना ऐतिहासिक ग्रंथ 'एनल्स एण्ड एंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान' लिखा। इसके पश्चात एफ. एस. ग्राउज, जान बीम्स, डॉ. ए. एफ. रुडल्फ होर्नले ने पृथ्वीराज रासो से संबंधित अध्ययन किया। डॉ. बूलर, बीम्स, डॉ. ए. एफ. रुडल्फ होर्नले ने पृथ्वीराज रासो के संबंधित अध्ययन किया। डॉ. बूलर एवं जेम्स कवि मॉरिसन के विरोध के कारण रासो का प्रकाशन बंद हो गया पर विद्वानों में पृथ्वीराज रासो विषयक जिज्ञासा की उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।

तब श्री मोहन लाल विष्णुलाल पांड्या और कविराज श्यामलदास के ऐतिहासिक विवादास्पद संवाद के फलस्वरूप काल में बाबू राधाकृष्ण दास ने पृथ्वीराज की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए रासो के महत्व को उद्घाटित 'पृथ्वीराज चरित' (सन् 1899) में किया। मुंशी देवी प्रसाद ने रासो की समीक्षा की। श्याम सुंदर दास, मिश्र बंधु, हरप्रसाद शास्त्री, डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी ने भी अपने विचार व मान्यताएँ बतायीं। डॉ. दशरथ लाल शर्मा ने रासो से संबंधित ऐतिहासिक मान्यताओं, इसकी और पृथ्वीराज के समकालीन शासकों के ऐतिहासिक तथ्यों का खंडन किया। गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने रासो को अनैतिहासिक सिद्ध किया तथा इसको 1600 के उपरान्त का सिद्ध किया।

रमाशंकर त्रिपाठी ने छंद के प्रयोगों पर सार्थक विचार प्रकट किये। डॉ. ए. जी. वूल्नर की प्रेरणा से पंजाब विश्वविद्यालय के मथुरा प्रसाद दीक्षित ने [illegible] छंद [illegible] पृथ्वीराज रासो का आंशिक संपादन किया तथा अनेक निबंध लिखकर ओझा जी के आरोप का खंडन किया। हिंदी साहित्य के इतिहासकारों में गार्सां द तासी, डॉ. ग्रियर्सन, डॉ. श्यामसुंदर दास, रामचंद्र शुक्ल, डॉ. रामकुमार वर्मा, पं. मोतीलाल ने रासो को अनैतिहासिक और अप्रमाणिक सिद्ध किया। इसके विपरीत डॉ. दशरथ शर्मा, पं. झाबरमल्ल शर्मा, नरोत्तम दास स्वामी, अगरचंद नाहटा, मीनाराम रंगा, इंद्र [illegible] भटनागर, कविराव मोहन सिंह, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, मूलराज जैन आदि ने रासोकार और रासो एवं उसके विविध पक्षों पर विचारोत्तेजक और तर्कपूर्ण निबंध लिखकर रासो के महत्व का प्रतिपादन किया।

डॉ. माता प्रसाद गुप्त ने रासो पृथ्वीराज रासो में आगत मान्यताओं और विविध वाचनाओं में समान रूपेण भाषा के आधार पर 'पृथ्वीराज रासउ' नामक ग्रंथ का संपादन किया तथा आचार्य द्विवेदी तथा डॉ. नामवर सिंह द्वारा संपादित संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो में रही शिथिलताओं का निर्देश भी किया। रासो की प्रामाणिकता अप्रामाणिकता के ऐतिहासिक विवाद के मूल में रासो के साहित्यिक एवं काव्य के कलात्मक मूल्यांकन का अभाव रहा है और इसे ऐतिहासिक ग्रंथ के रूप में ही विवाद का आधार बनाया जाता है। रासो की प्रामाणिकता के संदर्भ में विद्वानों के निम्न चार पक्ष निर्मित हो गए हैं—

(क) प्रथम पक्ष — इस पक्ष के विद्वान रासो के वर्तमान स्वरूप